बरनन कराए मुझपे, हकें सब अपने अंग।
सो विध विध विवेक सों, सो गाया दिल रूह संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुझसे अपने सभी अंगों का वर्णन कराया, इसलिए मैंने उसे अपने दिल और रूह के साथ अनेक प्रकार से जाहिर किया।

जो जोरा होए इस्क का, तो निकसे ना मुख दम।
सो गाए के इस्क गमाइया, जोरा कराया इलम।। २ ।।

यदि इश्क की ताकत होती तो मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता। जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति से वियोग गा-गाकर इश्क को गंवा दिया।

इलम दिया याही वास्ते, कहूं जरा न रही सक।
अव्वल से आज लगे, ऐसा कराया हक।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान इसलिए दिया, ताकि किसी प्रकार का संशय न रह जाए। श्री राजजी महाराज ने शुरू से आज दिन तक ऐसा ही मुझसे कराया।

इस्क हमसे जुदा किया, दिया दुनी को सुख कायम।
वचन गवाए हमपे, जो हमेसगी दायम।। ४ ।।

हमसे श्री राजजी महाराज ने इश्क छीन लिया। हमारे द्वारा दुनियां को तारतम ज्ञान दिलाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान कराई। उस वाणी को हमसे गवाया, जिस अखण्ड सुख के हम हमेशा से लेने वाले हैं।

नैन श्रवन या रसना, जो अंग किए बरनन।
तिन इस्क देखाया हक का, और देख्या ना या बिन।। ५ ।।

हमने नेत्र, कान, रसना और श्री राजजी महाराज के अंगों का जो वर्णन किया है, उसमें हमें श्री राजजी महाराज का इश्क ही दिखाई दिया। इश्क के बिना और कुछ नहीं।

जो अंग देखे आखिर लग, तिनसे देखे चौदे तबक।
और काहूं न देख्या कछूए, बिना हक इस्क।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग जो भी मैंने अन्त तक देखे, उससे मुझे चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड की पहचान हो गई कि यह संसार मिथ्या है। श्री राजजी महाराज के किसी भी अंग में सिवाय इश्क के और कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

बूझी तुमारी साहेबी, दिया सब अंगों इस्क देखाए।
तुमारे हर अंगों ऐसा किया, रहे चौदे तबक भराए।। ७ ।।

हे श्री राजजी महाराज! हमने आपकी साहेबी को पहचान लिया है। आपने अपने सभी अंगों के इश्क को दिखा दिया है। अब आपके हर एक अंग ने ऐसा कर दिया है कि मैं चौदह लोकों में आपका इश्क ही भरा देखती हूं।

रसनाएं इस्क देखाइया, तिन भर्या जिमी आसमान।
इस्क बिना न पाइए, बीच सकल जहान।। ८ ।।

आपकी जागृत बुद्धि की वाणी ने इश्क दिखलाया। उससे सारी जमीन और आसमान इश्क से भर गया। अब संसार में इश्क के बिना कहीं कुछ नहीं है।

Nijanand App

सब अंग देखे ऐसे हक के, ऐसा दिया इलम।
हक इस्क सबों में पसरया, इस्क न जरा माहें हम।। ९ ।।

अब आपके सभी अंगों को मैंने ऐसा देखा, जैसा आपकी जागृत बुद्धि के ज्ञान ने बताया। अब सारे संसार में इश्क फैल गया है और हमारे अन्दर जरा भी नहीं है। हम कोरे के कोरे हैं।

यों हर अंग हक के, सब सो ए किए रोसन।
आसमान जिमी के बीच में, कछू देख्या न इस्क बिन।। १० ।।

अब श्री राजजी महाराज के सभी अंगों को मैंने संसार में जाहिर किया। अब आसमान और जमीन के बीच में इश्क के बिना इस संसार में कुछ दिखाई नहीं देता।

इस्क हमारा हक सों, दिया हुकमें आड़ा पट।
हक का इस्क हम सों, किया दुनियां में प्रगट।। ११ ।।

हमारे और आपके इश्क के बीच में आपके हुकम ने यह वजूद का आड़ा पट डाल रखा है, इसलिए श्री राजजी महाराज के इश्क को हुकम ने हमसे दुनियां में जाहिर कराया।

यों हांसी हम पर करी, बनाए हमारे अक्स।
इस्क लिया खैंच के, होसी एही हांसी बीच अर्स।। १२ ।।

हुकम से हमारे ऐसे नकली तन बनाकर हमारे ऊपर हंसी की है। हमसे इश्क छीन लिया है। यही परमधाम में हंसी होगी।

हक फेर फेर ऊपर जगावहीं, बिना हुकम न जागे अंदर।
फेर फेर बड़ाई मांगें इत, हक हांसी करें इनों पर।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज बार-बार ऊपर से जगाते हैं, परन्तु अन्दर से हुकम जागने नहीं देता। वह बार-बार संसार में साहेबी मंगवा रहा है, ताकि श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर हंसी कर सकें।

मांगे दुनी में हक लज्जत, सो भी बुजरकी वास्ते।
इलमें हुए यों बेसक, एक जरा न दुनियां ए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से हम निःसंदेह हो गए और हमें यह पता चल गया कि यह दुनियां कुछ भी नहीं है। फिर भी हमने श्री राजजी महाराज से दुनियां में बुजुरकी मांगी, ताकि इनके बीच हम बड़े कहला सकें।

यों जान मांगें फना मिने, लज्जत दुनी में हक।
यों हुकम हांसी करावहीं, दे अपना इलम बेसक।। १५ ।।

ऐसा जानकर भी हम झूठे संसार में श्री राजजी महाराज की साहेबी की लज्जत (महाराज बनना) चाहते हैं। अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हुकम हमारी ऐसी हंसी कराता है।

आप मंगावें आप देवहीं, ए सब हांसी कों।
ए सब जानें मोमिन, सक नहीं इनमों।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज हम से मंगवाते हैं और आप ही देने वाले हैं। यह सब हंसी के वास्ते है। इस बात को मोमिन जानते हैं। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

Nijanand App

कैयों पेहेचान होवहीं, कैयों नहीं पेहेचान।
सो सब होत हांसीय को, करत आप सुभान।। १७ ।।

कई मोमिनों को पहचान हो गई। कई को नहीं हुई। यह सब हंसी के वास्ते ही श्री राजजी महाराज कर रहे हैं।

ए किया वास्ते इस्क बेवरे, सो इस्क न आया किन।
काहूं जोस जरा आइया, काहूं जरा ना किस तन।। १८ ।।

यह खेल इश्क के विवरण के वास्ते बनाया, इसलिए यहां इश्क किसी को नहीं आया। किसी को जरा सा जोश आया और किसी के तन में कुछ भी नहीं आया।

वास्ते रब्द इस्क के, जो किया बीच खिलवत।
सो हुकम आड़ा सब दिलों, तो इस्क न काहूं आवत।। १९ ।।

मूल-मिलावा में इश्क के वास्ते ही रब्द हुआ था, इसलिए रूहों के दिलों पर हुकम का आड़ा परदा डाल दिया है और किसी को भी इश्क नहीं मिल रहा है।

इलम दिया सबन को, किया अर्स दिल मोमिन।
दूर कर सब हिजाब, आप आए अर्स दिल इन।। २० ।।

सभी मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया और उनके दिल को अपना अर्श किया। हमारे सभी अज्ञानता के परदे हटा करके ही हम मोमिनों के दिल में बैठे हैं।

पेहेचान सब अर्सों की, अर्सों बीच की हकीकत।
सो जरा छिपी ना रखी, सब दई हक मारफत।। २१ ।।

आपने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत की सभी अर्शों की पहचान करा दी और उनकी हकीकत बतला दी। अब आपके मारफत के ज्ञान से मोमिनों से कोई बात छिपी नहीं है।

पर इस्क न दिया आवने, वास्ते रब्द के।
हक आए इस्क क्यों न आवहीं, किया हुकमें हांसी को ए।। २२ ।।

परन्तु इश्क रब्द के कारण से ही इश्क नहीं आने दिया। नहीं तो श्री राजजी के आने पर इश्क क्यों नहीं आता? यह हालात हुकम ने हंसी के वास्ते ही बना दिये हैं।

रूहों लज्जत मांगी हकपे, अर्स की दुनियां माहें।
तो इलम दिया सबों अपना, बिना इलम लज्जत नाहें।। २३ ।।

रूहों ने श्री राजजी महाराज से संसार में परमधाम की लज्जत मांगी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने सबको अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दे दिया, क्योंकि बिना इस ज्ञान के लज्जत नहीं मिलती।

जो हक देवें इस्क, तो इस्क देवे सब उड़ाए।
सुध न लेवे वार पार की, देवे वाहेदत बीच डुबाए।। २४ ।।

अब श्री राजजी महाराज ही इश्क दें, तो इश्क से सारा संसार छूट जाए और फिर मूल-मिलावा की एकदिली में गर्क हो जाए। संसार या परमधाम की सुध लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

Nijanand App

जब इलम सबों आइया, सो कछू सखती देवे दिल।
तिन सखती तन अर्स की, पाइए लज्जत असल।। २५ ।।

जब सभी को जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया, तो सभी के दिल कुछ कठोर हो गए। उन कठोर दिलों से परमधाम की असली लज्जत का सुख मिला।

हुकम मांगे देवे हुकम, सो सब वास्ते हांसी के।
ए बातें होसी सब खिलवतें, इस्क रब्द किया जे।। २६ ।।

हुकम मंगवाता है और देने वाला भी हुकम ही है। यह सब हंसी के वास्ते ही है। जहां इश्क रब्द किया था, उस मूल-मिलावा में ही बातें होंगी।

अनेक हकें हिकमत करी, सो इन जुबां कही न जाए।
होसी हांसी सबों अर्स में, जब करसी बातें बनाए।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज ने कई तरह की हिकमत कर रखी है जो इस जबान से कही नहीं जाती। हम सबके ऊपर परमधाम में हंसी होगी। उस समय सभी अपनी-अपनी बातें करेंगी।

हकें किया सब हांसीय को, जो जरे जरा माहें खेल।
इस्क रब्द के कारने, तीन बेर आए माहें लैल।। २८ ।।

खेल में जर्रा-जर्रा जो कुछ भी हो रहा है, यह सब श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते ही किया है। इश्क रब्द के कारण ही हम तीन बार खेल देखने रात्रि में आए।

हक हांसी बातें जानें हक, या जाने हक इलम।
इन इलमें सिखाई रूहों, सो बातें अर्स में करसी हम।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की हंसी की बातों को श्री राजजी महाराज ही जानते हैं या उनकी जागृत बुद्धि का ज्ञान जानता है। इनके इलम ने रूहों को सब कुछ सिखाया है, जिसकी बातें हम परमधाम में करेंगे।

एही खुलासा सब बात का, हकें किया हांसी को।
रेहेता रब्द रूहों इस्क का, सब केहेतियां बड़ा हम मों।। ३० ।।

सब बातों का एक यही सार है कि श्री राजजी महाराज ने यह सब कुछ हंसी के वास्ते किया है। परमधाम में सभी रूहें रब्द के समय अपने इश्क को बड़ा बताती थीं।

याही वास्ते खेल देखाइया, इस्क गया सबों भूल।
फेर के सब सुध दई, भेज फुरमान रसूल।। ३१ ।।

और इस वास्ते यह खेल दिखाया। इश्क हम सब भूल गए। फिर श्री राजजी महाराज ने रसूल साहब के हाथ कुरान भेजकर याद दिलाई।

इनमें इसारतें रमूजें, सो खोल न सके कोए।
कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, इमाम हाथ खोलाया सोए।। ३२ ।।

इस कुरान में श्री राजजी महाराज ने सभी बातें इशारतों में लिखी हैं, जिसे और कोई नहीं खोल सकता। फिर जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी श्री श्यामा महारानी के हाथ भेजी और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी से सारे भेद खुलवाए।

Nijanand App

हांसी याही बात की, किए सब खेल में खबरदार।
तो भी इस्क न आवत, हुई हांसी बे–सुमार।। ३३ ।।

इस तरह से हम सब रूहों को खेल में सावचेत (सतर्क) कर दिया। फिर भी हमको इश्क नहीं आता है। इसी वास्ते ही बेशुमार हंसी होगी।

हक इस्क जाहेर हुआ, खेल माहें दम दम।
और न चौदे तबकों, बिना इस्क खसम।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क खेल में हर किसी को जाहिर हो गया है। चौदह तबकों में श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना कुछ भी नहीं है।

ऐसा इलम हकें दिया, हुआ इस्क चौदे भवन।
मूल डार पात पसरया, नजरों आया सबन।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ऐसा ज्ञान दिया कि चौदह तबकों में इश्क फैल गया। यहां तक कि पाताल से बैकुण्ठ तक डाल-डाल तथा पत्तों-पत्तों में इश्क दिखने लगा।

तले सात तबक जिमीय के, या बीच ऊपर आसमान।
मूल बिरिख पात फूल फैलिया, सब हुआ इस्क सुभान।। ३६ ।।

इस जमीन के नीचे सात लोक हैं और ऊपर छः आसमान। यहां पाताल से बैकुण्ठ तक सभी जगह श्री राजजी महाराज का इश्क फैल गया है।

नजरों आया सबन के, जब पसरया ए इलम।
तब और न देखे कछू नजरों, बिना इस्क खसम।। ३७ ।।

जब जागृत बुद्धि का ज्ञान फैला, तो सबको पारब्रह्म की पहचान हुई और तब एक उस खसम के इश्क के बिना किसी को और कुछ दिखाई ही नहीं देगा।

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, ऐसी दई बुजरकी रूहन।
ढूंढ़ ढूंढ़ थके चौदे तबकों, पर बका तरफ न पाई किन।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन रूहों के दिल को अर्श कहा है। ऐसी साहेबी रूहों को दी है। चौदह तबकों की दुनियां खोज-खोजकर थक गई, पर अखण्ड घर की खबर किसी को नहीं मिली।

तबक चौदमें मलकूत, ला हवा सुन्य तिन पर।
ता पर बका नूरमकान, जो नूरजलाल अछर।। ३९ ।।

चौदवें लोक में बैकुण्ठ है और शून्य निराकार उसके ऊपर। फिर अखण्ड अक्षरधाम है। जहां के साहेब नूरजलाल (अक्षरब्रह्म) कहलाते हैं।

कई ऐसे खेल पैदा फना, होंए नूरजलाल के एक पल।
इन कादर की कुदरत, ऐसा रखत है बल।। ४० ।।

अक्षरब्रह्म के एक पल में ऐसे कई खेल बनकर मिट जाते हैं। अक्षरब्रह्म की योगमाया इतनी शक्ति रखती है।

Nijanand App

तरफ अर्स अजीम की, कोई जाने ना एक नूर बिन।
पर गुझ मता न जानहीं, जो है नूरजमाल बातन।। ४१ ।।

इस अक्षरब्रह्म के अतिरिक्त परमधाम की बात कोई नहीं जानता। यह अक्षरब्रह्म भी श्री राजजी महाराज के बातूनी गुप्त रहस्यों को नहीं जानते।

सो गुझ हक हादीय का, दिया खेल में बीच मोमिन।
तो दिल अर्स किया हकें, जो अर्स अजीम में इनों तन।। ४२ ।।

वह गुप्त हकीकत श्री राजश्यामाजी की मोमिनों को खेल में मिल गई। इनके मूल तन परमधाम में हैं। उनके ही संसार के दिल में श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है।

हकें अर्स की सुध सब दई, पाई हकीकत मारफत।
हक हादी रूहें खिलवत, ए बीच असल वाहेदत।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की सभी सुध हकीकत और मारफत के ज्ञान से दी, जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के मूल-मिलावा में असल तनों के बीच हुई थीं।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हक इस्क बोले बेसक।
इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक।। ४४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने वचनों से जो इश्क का दावा किया था, वही सच्चा है। परमधाम के मूल-मिलावा के इश्क रब्द में कहे अनुसार इस संसार में माशूक श्री राजजी महाराज आशिक बन गए।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ २०६९ ॥

हक मेहेबूब के जवाब

रूहों मैं–रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुमें चाहों।
वास्ते तुमारे कई विध के, इस्क अंग उपजाओं।। १ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे रूहो! मैं तुम्हारा आशिक हूं और सदा ही तुम्हारे सुख की चाहना करता हूं। तुम्हारे अंगों में इश्क उपजाने के लिए कई तरह के उपाय करता हूं।

मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल।। २ ।।

मैं तुम्हारा आशिक हूं। यह इश्क के शब्द मैंने कुरान में लिखे। मैंने तुम्हें अपना माशूक करके लिखा। इन वचनों पर भी तुमने ध्यान नहीं दिया।

अव्वल बीच और आखिर, लिखे तीनों ठौर निसान।
ए बीतक हम तुम जानहीं, भेजी तुमको पेहेचान।। ३ ।।

कुरान में मैंने शुरू के, बीच के और आखिर के (बृज, रास और जागनी) सभी निशान लिखे हैं। यह मेरे और तुम्हारे बीच बीती बातें हैं। तुम्हें याद कराने के लिए कुरान में लिखीं।

Nijanand App